Journal of Frontiers in Multidisciplinary Research

नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (NIEO): ऐतिहासिक विकास, सिद्धांत एवं वैश्विक प्रासंगिकता

पूजा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

* Corresponding Author: **पूजा**

Article Info

E-ISSN: 3050-9726
P-ISSN: 3050-9718
Volume: 07
Issue: 02
Received: 05-06-2026
Accepted: 03-07-2026
Published: 04-08-2026
Page No: 163-165

सारांश
यह अध्ययन वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के विकास, उसकी शोषक संरचनाओं तथा इसके उत्तर में उभरी 'नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था' (New International Economic Order - NIEO) की अवधारणा का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। वैश्विक राजनीति में यथार्थवादी सिद्धांत जहाँ शक्ति संतुलन को प्राथमिक मानता है, वहीं उदारवाद व नव-उदारवाद अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के माध्यम से परस्पर निर्भरता और सहयोग पर बल देते हैं। यद्यपि संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी वैश्विक संस्थाओं ने शांति और संवाद का मंच प्रदान किया, किंतु व्यावहारिक रूप से ये प्रायः विकसित राष्ट्रों के वर्चस्व और 'तृतीय विश्व' (विकासशील व अल्प-विकसित देशों) के आर्थिक शोषण का माध्यम बनीं।
उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के दंश से मुक्त हुए एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के राष्ट्रों ने इस असंतुलित व्यवस्था को चुनौती देने के लिए गुटनिरपेक्ष आंदोलन, G-77, UNCTAD और G-15 जैसे मंचों के माध्यम से एक न्यायपूर्ण और समतामूलक व्यवस्था की मांग की। 1962 के काहिरा सम्मेलन से लेकर 1972 की UNCTAD रिपोर्ट, 1982 के दिल्ली सम्मेलन (दक्षिण-दक्षिण सहयोग) तथा बाद की G-15 बैठकों तक, NIEO के ऐतिहासिक विकास क्रम को रेखांकित किया गया है। अंततः, यह लेख वित्तीय व व्यापारिक असमानता, तकनीकी निर्भरता, बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) के अनियंत्रित व्यवहार तथा कच्चे माल की शोषक कीमतों के विरोध में NIEO द्वारा प्रस्तुत सिद्धांतों का विश्लेषण करता है, जो वैश्विक आय और संसाधनों के समतामूलक वितरण पर बल देते हैं।

Keywords: नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (NIEO), तृतीय विश्व, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, उत्तर-दक्षिण संवाद, G-77, G-15, UNCTAD, बहुराष्ट्रीय निगम (MNCs), नव-उपनिवेशवाद

प्रस्तावना
वर्तमान वैश्विक परिवेश अनेक ऐतिहासिक एवं वैचारिक परिवर्तनों का प्रतिफल रहा है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों का सहारा लिया जाता रहा है; जहाँ एक ओर यथार्थवादियों के नजरिये से अंतरराष्ट्रीय राजनीति को सदैव 'शक्ति के लिए संघर्ष' माना गया है, वहीं दूसरी ओर उदारवादियों के नजरिये से प्रत्येक स्तर पर सहयोग, संवाद और परस्पर निर्भरता को प्राथमिकता दी जाती है।
इन वैचारिक ढाँचों के निर्माण और वैश्विक परिवर्तनों में अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद 'लीग ऑफ नेशंस' (League of Nations) की विफलता ने जहाँ यथार्थवादी विचारों को बल प्रदान किया, वहीं द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात संयुक्त राष्ट्र संघ (UN) के सफर ने उदारवाद और नव-उदारवाद को मज़बूत बनाया—जो वैश्विक शांति और स्थिरता में संस्थागत संरचनाओं की भूमिका को अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इन वैश्विक संस्थाओं ने विभिन्न समुदायों व राष्ट्रों को अपना पक्ष रखने का अवसर तो दिया, किंतु व्यावहारिक धरातल पर कई बार ये संस्थाएँ विकसित देशों के प्रभुत्व का साधन बनीं, जिसके कारण विकासशील व अल्प-विकसित देशों का आर्थिक शोषण हुआ। इसी शोषण और असमानता की पृष्ठभूमि में तृतीय विश्व के देशों ने अपनी आवाज़ उठानी शुरू की। उन्होंने एक ऐसी समतामूलक वैश्विक व्यवस्था की मांग की जो उनके हितों का संरक्षण कर सके। इसी प्रयास के परिणामस्वरूप 'नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था' (New International Economic Order - NIEO) की अवधारणा का जन्म हुआ।

अवधारणा

नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है जो विकसित व विकासशील राष्ट्रों के लिए समान व न्यायपूर्ण आर्थिक व्यवस्था बनाने की मांग करती है। विकासशील राष्ट्रों को 'तृतीय विश्व' के नाम से भी जाना जाता है। यह राष्ट्र सीधे तौर पर साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद (साम्राज्यवाद, जो एक भूमि विस्तारण की प्रक्रिया है; वहीं उपनिवेशवाद, किसी दूर स्थित स्थान पर आधिपत्य स्थापित करने की प्रवृत्ति है) से जुड़े रहे हैं, क्योंकि ये राष्ट्र द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात हाल ही में स्वतंत्र हुए थे। स्वतंत्रता के समय इनकी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक स्थिति काफ़ी शोचनीय थी और ये राष्ट्र विकसित राष्ट्रों की तुलना में तकनीकी रूप से काफ़ी पिछड़े हुए थे। लैटिन अमेरिका, अफ्रीका व एशिया के अधिकांश राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों या तृतीय विश्व के रूप में जाने जाते हैं।

नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य वर्तमान भेदभावपूर्ण आर्थिक व्यवस्था को समाप्त कर एक नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है जो समान आर्थिक संबंधों को स्थापित करे। नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के समर्थक राष्ट्रों का मानना है कि विकासशील और विकसित राष्ट्रों के मध्य गहरी आर्थिक असमानता है, क्योंकि वर्तमान आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः विकसित राष्ट्रों के हितों की पोषक है। इसलिए NIEO का उद्देश्य वर्तमान व्यवस्था को रूपांतरित करना है ताकि यह तृतीय विश्व के राष्ट्रों के हितों की भी पोषक बन सके।

इसका प्रमुख ध्येय नव-उपनिवेशवाद का अंत कर अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं को अधिक तर्कसंगत बनाना है, जिससे विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के आर्थिक शोषण को समाप्त किया जा सके। इसके साथ ही विश्व की आय तथा संसाधनों का न्यायपूर्ण व समान बँटवारा करना है, ताकि विकासशील देश भी विकसित राष्ट्रों की तरह आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सकें।

नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का ऐतिहासिक विकास

नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की मांग और विकास का एक लंबा ऐतिहासिक क्रम रहा है, जिसे विभिन्न सम्मेलनों और अंतरराष्ट्रीय मंचों के माध्यम से समझा जा सकता है:

- **1962 (काहिरा सम्मेलन):** सर्वप्रथम गुट-निरपेक्ष देशों द्वारा आयोजित काहिरा सम्मेलन में नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग को औपचारिक रूप से उठाया गया।
- **1970:** गुट-निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में इसी मांग को पुनः दोहराया गया।
- **1972 (UNCTAD रिपोर्ट):** संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापार और विकास सम्मेलन (UNCTAD) द्वारा 'विकास के लिए नई व्यापार नीति' (*A New Trade Policy for Development*) शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसमें निम्नलिखित प्रमुख मुद्दों पर बल दिया गया:
  - **कच्चे माल पर नियंत्रण:** विकासशील राष्ट्र कच्चे माल का निर्यात करने के बजाय स्वयं वस्तुओं का निर्माण करें और उन्हें बाज़ार में बेचें, जिससे उन्हें अधिक लाभ हो।
  - **आर्थिक शोषण का अंत:** विकसित और विकासशील देशों के मध्य बढ़ते आर्थिक अंतर को कम करने पर ज़ोर दिया गया।
  - **तकनीकी व वित्तीय सहायता:** विकासशील देशों को तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान की जाए ताकि वे अपनी राष्ट्रीय आय बढ़ा सकें और तकनीकी निर्भरता समाप्त हो।
  - **वित्तीय संस्थाओं का योगदान:** विश्व बैंक (World Bank) और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की भूमिका को विकासशील देशों के अनुकूल बढ़ाया जाए।
- **1973 (अल्जीयर्स सम्मेलन):** गुटनिरपेक्ष देशों द्वारा विकसित राष्ट्रों की शोषक प्रवृत्ति के विरुद्ध नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना तथा बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) की गतिविधियों पर नियंत्रण लगाने के सिद्धांत को अपनाया गया।
- **1975 (लीमा सम्मेलन):** विकासशील राष्ट्रों के मध्य निर्यातित कच्चे माल के मध्यवर्ती भंडारों तथा प्राथमिक उत्पादों को वित्तीय सहायता देने हेतु एक संचित कोष की स्थापना पर सहमति बनी।
- **1975 (पेरिस बैठक):** विकसित व विकासशील राष्ट्रों के 28 प्रतिनिधियों के बीच अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग पर बैठक हुई, किंतु कोई ठोस परिणाम नहीं निकला।
- **1976 (कोलंबो सम्मेलन):** गुटनिरपेक्ष सम्मेलन में विकासशील राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक संबंधों व आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया गया।
- **1981 (कैनकुन शिखर वार्ता):** उत्तर-दक्षिण (North-South) आर्थिक संबंधों पर वार्ता हुई, परंतु सर्वमान्य निर्णय पर सहमति नहीं बन सकी।
- **1982 (नई दिल्ली सम्मेलन - दक्षिण-दक्षिण सहयोग):** 22 से 24 फरवरी 1982 तक आयोजित इस सम्मेलन में 'दक्षिण-दक्षिण सहयोग' (South-South Cooperation) को बढ़ाने, सामूहिक आत्मनिर्भरता तथा G-77 (जो कि विकासशील देशों का समूह है) के भीतर नीतियों में सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया गया। इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए:
  I. कृषि तथा खाद्य पदार्थों में आत्मनिर्भरता हेतु कार्यक्रमों का निर्माण।
  II. ऊर्जा के संबंध में एक विश्व बैंक जैसी संस्था की स्थापना।
  III. विकासशील देशों के बीच तकनीकी सहयोग तथा साझा उद्योगों हेतु बहुपदीय वित्तीय सुविधा का निर्माण।
- **जून 1987:** दक्षिण-दक्षिण सहयोग पर गुटनिरपेक्ष देशों की बैठक हुई, जो NIEO की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास था।
- **1988 (कुआलालंपुर):** विकासशील देशों की आर्थिक समस्याओं से निपटने के लिए बहुमुखी रणनीति के निर्माण पर विचार किया गया।
- **1990 (कुआलालंपुर - G-15 बैठक):** विकासशील राष्ट्रों की आत्मनिर्भरता, क्षेत्रीय/उप-क्षेत्रीय व्यापार संगठनों और तकनीकी हस्तांतरण पर बल दिया गया। साथ ही G-7 राष्ट्रों के साथ निरंतर वार्ता जारी रखने की प्रतिबद्धता जताई गई।
- **1995 (ब्यूनस आयर्स - G-15 बैठक):** G-7 राष्ट्रों के साथ वार्ता का आह्वान किया गया और वैश्वीकरण (Globalization) की प्रक्रिया में व्याप्त शोषणकारी प्रवृत्तियों को विकासशील देशों के हितों के विपरीत बताया गया।
- **1999 (जमैका - G-7 बैठक):** वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में विकासशील देशों को अधिक महत्त्व देने और संस्थागत सुधारों की मांग की गई।
- **2000 (काहिरा - G-15 सम्मेलन):** विश्व व्यापार संगठन (WTO) के उत्तरदायित्वों को विकासशील देशों की समस्याओं के संदर्भ में पुनर्निर्धारित करने की मांग की गई।
- **2001 (जकार्ता):** सूचना एवं प्रौद्योगिकी (IT) के क्षेत्र में विकासशील देशों के बीच सहयोग और सामंजस्य पर बल दिया गया।
- **2004 (काराकास - वेनेजुएला):** गरीबी उन्मूलन और ऊर्जा संसाधनों के साझा उपयोग का संकल्प लिया गया।
- **2006 (हवाना - क्यूबा):** ग्रामीण विकास, कृषि विकास तथा जल स्रोतों के बेहतर प्रबंधन को मुख्य मुद्दा बनाया गया।

- **2010 (तेहरान) एवं 2012 (कोलंबो - G-15 बैठकें):** तत्कालीन वैश्विक आर्थिक चुनौतियों से मिलकर निपटने पर सहमति व्यक्त की गई।

G-77, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, G-15 और गुटनिरपेक्ष सम्मेलनों द्वारा लगातार NIEO की मांग उठाई जाती रही है, किंतु विकसित राष्ट्रों का रवैया इन मांगों के प्रति प्रायः नकारात्मक ही रहा है।

नई अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख सिद्धांत

वर्तमान अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में व्याप्त पक्षपात को समाप्त करने के लिए विकासशील राष्ट्रों ने NIEO के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांत निर्धारित किए हैं:

1. **विश्व मुद्रा प्रणाली का सामान्यीकरण:** वर्तमान व्यवस्था में विकासशील राष्ट्रों की मुद्रा का मूल्य विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है। अतः मुद्रा प्रणाली का सामान्यीकरण किया जाए ताकि विकासशील देशों की मुद्रा भी सशक्त हो सके।
2. **तकनीकी खाई को कम करना:** विकसित देश अपनी पुरानी व घिसी-पिटी तकनीकों को विकासशील देशों को महँगे दामों पर बेचते हैं। इस तकनीकी अंतर और शोषण को समाप्त किया जाना आवश्यक है।
3. **वित्तीय बोझ में कमी:** विकसित राष्ट्र आवश्यकता पड़ने पर विकासशील राष्ट्रों को बिना शोषक शर्तों के आर्थिक सहायता प्रदान करें।
4. **बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) पर नियंत्रण:** बहुराष्ट्रीय कंपनियों को संबंधित देश के कानूनों तथा WTO के नियमों के अधीन कार्य करना होगा; वे केवल अपने लाभ के लिए कार्य नहीं कर सकतीं।
5. **व्यापारिक वरीयता:** विकसित राष्ट्रों द्वारा विकासशील राष्ट्रों को व्यापार में प्राथमिकता और छूट दी जानी चाहिए।
6. **निर्यात प्रोत्साहन:** विकासशील देश अपने कच्चे माल से स्वयं निर्मित वस्तुओं का निर्यात करें और अधिक लाभ अर्जित करें।
7. **मूल्य स्थिरता:** कच्चे माल की कीमतों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव को रोका जाए तथा कच्चे माल और तैयार माल की कीमतों के बीच के अनुचित अंतर को समाप्त किया जाए।
8. **संसाधनों पर राष्ट्रीय संप्रभुता:** प्रत्येक देश को अपने प्राकृतिक संसाधनों और आर्थिक गतिविधियों पर पूर्ण संप्रभु अधिकार प्राप्त होना चाहिए।

निष्कर्ष

नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (NIEO) का मुद्दा एक साझा वैश्विक मुद्दा है। वर्तमान भेदभावपूर्ण वैश्विक आर्थिक ढाँचे को रूपांतरित करके ही एक समतामूलक, न्यायपूर्ण और समावेशी विश्व व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि विकसित और विकासशील देश टकराव के स्थान पर परस्पर सहयोग, संवाद और सहअस्तित्व की नीति को अपनाएँ।

संदर्भ सूची (References)

1. Bhagwati JN, editor. The new international economic order: the North-South debate. Cambridge (MA): MIT Press; 1977.
2. Baylis J, Smith S, Owens P. The globalization of world politics: an introduction to international relations. 8th ed. Oxford: Oxford University Press; 2020.
3. Cox RW. Production, power, and world order: social forces in the making of history. New York: Columbia University Press; 1987.
4. Frank AG. Capitalism and underdevelopment in Latin America. New York: Monthly Review Press; 1967.
5. Ghosh BN. Dependency theory revisited. Aldershot: Ashgate Publishing; 2001.
6. Gilpin R. Global political economy: understanding the international economic order. Princeton (NJ): Princeton University Press; 2001.
7. Khanna VN, Kumar A. International relations. 5th ed. New Delhi: Vikas Publishing House; 2018.
8. Krasner SD. Structural conflict: the Third World against global liberalism. Berkeley (CA): University of California Press; 1985.
9. Pant P. International relations in the 21st century. 2nd ed. New Delhi: McGraw Hill Education (India); 2018.
10. Prebisch R. The economic development of Latin America and its principal problems. Santiago: United Nations Economic Commission for Latin America; 1950.
11. Wallerstein I. World-systems analysis: an introduction. Durham (NC): Duke University Press; 2004.
12. Bedjaoui M. Towards a new international economic order. Paris: UNESCO; 1979.
13. Bull H. The Third World and international society. Year Book of World Affairs. 1979;33:15-31.
14. Gosovic B, Ruggie JG. On the creation of a new international economic order: issue linkage and the Seventh Special Session of the UN General Assembly. International Organization. 1976;30(2):309-345.
15. Sauvant KP. The Group of 77: evolution, structure, organization. New York: Oceana Publications; 1981.